International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

जायसी के काव्य में प्रेम का प्रभाव और महत्व

अर्चना कुमारी
सहायक प्राध्यापिका (एकस्टेंशन)
विषय – हिन्दी
रा॰ स्ना॰ महाविद्यालय,
गोहाना

परिचय – सम्पूर्ण सृष्टि प्रेममयी है। इसकी रचना प्रेम के लिए प्रेम को स्थापित करने के लिए की गई है। सृष्टि का कण–कण अज्ञात प्रिय को खोज रहा है। प्रेम विश्वन्यापी है। प्रेम की चेतना संस्कार करता है। प्रेम ही सत्य है। मधुर साधना का केन्द्र प्रेम है। जायसी प्रेम का आदर्श रूप ही चित्रित करते हैं। इनके विचार में प्रेम से सुन्दर कोई वस्तु नहीं है। जायसी जी मानते हैं प्रेम ही ईश्वर का दूसरा रूप है और इस सृष्टि की रचना प्रेम को सार्थक बनाने के लिए की गई है।

प्रेम ही विश्व को चलाने वाला – जायसी जी का मत है बिना प्रेम के संसार में रूचि नहीं हो सकती। इनके अनुसार जिसने प्रेम रूपी फल नहीं चखा व चखकर रसास्वादन नहीं किया वह नर असल में पत्थर है। प्रेम करने वाले का मोह प्राणों से नहीं रहता –

प्रेम पंथ दिन धरी न देखा, तब देखे जब होई सरेखा,
जेहितन प्रेम कहां तेहि मांसू कया न रकत नैन नहीं आंसू।
पंडित भूल न जानै चालू , जीड लेत दिन पूछ न कालू।।

जायसी जी के अनुसार ईश्वर स्वमेव प्रेम है। हिन्दी सूफी काव्य की हर कथा का मूल आधार प्रेम है। इनका बीज व अंत प्रेम ही है ऐसा प्रतीत होता है वे प्रेम के अतिरिक्त कोई ज्ञान नहीं रखते।

ज्ञान दृष्टि सों जाई पहूँचा, प्रेम अदिस्ट गगन ते ऊंचा।
धुव ते ऊँव प्रेम–धुवा ऊँचा, सिर देर पांव देई सो छूआ।।
तिनि लोक चौदह खण्ड, सवै परे मोहि सूसि।
पेय छांडि नंहि लोन किछु, जो देखा मन बूझि।।

पद्मावती का ये श्लोक यही बता रहा है कि तीन लोक व चौदह खण्ड में प्रेम से सुन्दर कुछ नहीं है।

सृष्टि की रचना प्रेम के कारण हुई – जायसी का ही नहीं समस्त सूफी कवियों का विचार है कि प्रेम के लिए सृष्टि की रचना हुई है और इतना ही नहीं ये भी कहा गया है कि समय–समय पर ईश्वर अवतार ले कर आए व प्रेम को समझाया। चाहे वे मर्यादा पुरूषोत्तम राम हों या यशोदा नन्दन श्री कृष्ण ये सभी रूप प्रेम करने सिखाने या फैलाने इस धरती पर आए। इनके विचार में प्रेम केवल खुशी नहीं देता बल्कि कभी–कभी प्रेमी सिसक–सिसक कर अपनी वरूनियों से व्यर्थ कथा भी कहते हैं। क्योंकि प्रेम मिलन लेकर नहीं साथ में विरह ले कर आता है। प्रेम दुःख व कष्ट खुशी के साथ मिलकर लाता है –

मसि नैना लिखनी वरूनि, रोइ रोइ लिखा अकत्थ।
आखर दहै न कोई दयुवै, दीन्ह परेखा हत्थ।।

प्रेम की सबसे बड़ी पहचान है, निज पीड़ा भूल कर प्रियतम की कुशल की कामना करना।

प्रेम में हर वस्तु आकर्षित लगती है – जब इंसान प्रेम में होता है तो उसे सब कुछ सुन्दर लगने लगता है। प्रेम की सबसे बड़ी विशेषता है कि सांसारिक वस्तुओं में ऐसी रमणीयता नहीं प्राप्त हो सकती जब तक प्रेम का संचार न हो –

मुहम्मद बाजी प्रेम के ज्यों भावैं त्यों खेल।

तिल फूलाहि के संग ज्यों होय फुलायल तेल।।

आदर्श एवं पवित्र प्रेम साधना बड़ी कठिन है, इसमें आत्मसमर्पण करने से ही आनन्द की प्राप्ति होती है। वास्तव में प्रेम भाव अनिर्वचनीय है इसके माधुर्य को वही जान सकता है जो इस मार्ग का अनुसरण कर चुका है। जो इस मार्ग पर नहीं गया वह इसके वैशिष्ट्य को नहीं जान सकता –

प्रेम घाव दुःख जान न कोई, जेहि लगि जानै पै सोइ।
परा सो पेम समुद्र अपारा, लहरहिं लहर होइ विसमारा।
बिरह भंवर होई भांवरि देइ, खिन–खिन जीव हिलोरहिं तोई।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

खिनहि निसास बूडिजिउ जाई, खिनहि उठै निससै बौराई।
सिनहि पति खिन होइ मुख सेता, खिनहि चेत खिन होई अचेता।
कठिन मरण तें पेम व्यवस्था, न जिअं जिवन न दसई अवस्था।।

पद्मावत में भी इस पद्य के द्वारा जायसी यही दिखाना चाहते हैं कि प्रेम हर चीज से परे है, उसे दुःख सुख सब सुन्दर प्रतीत होने लगते हैं।

प्रेम के रस में दुःख बहता रहता है – सच्चा प्रेम जायसी के अनुसार वही है जो प्राणों के साथ ही जाता है। प्रेम रूपी भार उठाने पर मन में सोचना नहीं होता कि हमें भला मिलेगा कि बुरा। प्रेम रूपी पर्वत जब उठा लिया जाता है तो वह किसी भी प्रकार छुटता नहीं। वह हृदय से जुड़ जाता है व इंसान चाह कर भी उससे दूर नहीं हो सकता। इसके पथ में जितनी भी कठिनाइयां व दुःख मिलें सब हस कर व रो कर पार किए जाते हैं। प्रेम की स्थिति मरने से कठिन होती है क्योंकि न तो इसमें मर सकता है न चैन पा सकता है। प्रेम में न दिन देखा जाता है न रास्ता न घड़ी। जो प्रेम में पड़ जाता है वह मांस रहित हो जाता है पद्मावत का उदाहरण देखिए –

सुनतहि राजा गा मुरछाई, जान हू लहरि सुरूज कै आई,
प्रेम घाव दुःख जान न कोई, जेहि लागै जानै पै सोई।
परा सो पेम समुंद अपारा, लहरहि लहर होइ विसमारा,
विरह भंवर होई भांवरि देई, खिन–खिन जीव हिलोरहिं लेई।।

प्रेम में केवल समर्पित किया जाता है – प्रेम में न कोई डर रहता न घबराहट। जायसी जी का मत है दिपक पतंगा देख कर प्रेम के वशीभूत उसकी तरफ दौड़ लगाता है चाहे बेशक उसके प्राण चले जाएं वह तनिक भी नहीं डरता। ऐसा ही हाल इंसान का होता है वह अपने साथी के लिए प्राणों को भी त्याग देता है और हद तो तब होती है जब उसे ये सुध भी नहीं रहती है कि वह कठिनाइयों में घिर रहा है बस मस्त हो कर अपने साथी के साथ लगा रहता है हर मुसीबत को हंस कर सहता है। बस उसके साथ कुछ होता रहे उसके साथी पर कोई मुसीबत न आए –

ना जेइ भउए मोर कर रंगू , ना जेइ दीपक भएउ पतंग।

ना जेइ करा मृग कै होई, ना जेइ आपू मरै जीउ खोइ।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

ना जेइ प्रेम औहि एक भएउ, ना जेइ हिम मांझ उर गएऊ।

तेहि का कहिय रहब जिउ, रहै जो पीतम लागि।

जौ वह सुनै लेइ धंसि, का पानि का आगि।

जायसी जी का मानना है जिस हृदय में प्रेम की कसक बैठ गयी उसे यदि समझाया बुझाया जाए तो भी प्रभाव विपरीत ही पड़ता है। पीड़ा कम होने के स्थान पर बढ़ती ही जाती है। प्रेम में केवल इंसान को प्रेम सम्बन्धी बातें या वार्तालाप ही सुखकारी प्रतीत होते हैं। उसके हृदय में प्रेम ने अपना रंग जमा लिया है उसे न भूख लगती है न विश्राम प्राप्त होता है। पदमावत में रत्नसेन भी पदमावती से कहता है कि – हे प्यारी प्रेम वास्तव में मदिरा के समान है जिसके पान करने से जीवन मरण का भय एकदम जाता रहता है प्रेम में मानव को कोइ सुध नहीं रहती है। न मानव को भूख प्यास व्याकुल करते हैं न किसी भी वस्तु में रूचि रहती है। उसे कुछ दुःख दे सकता है तो अपने प्रिय का दुःख –

जेहि के हिय प्रेम रंग जामा, का तेंहि भूख नींद बिसरामा।

अर्थात् उसे थकान भी नहीं थका सकती। प्रेम के अभाव में सारी शिक्षा व साधना व्यर्थ है –

बिन प्रेम जो जीव निवाहा, सूने गाँउँ माँ आवै काहा।।

अर्थात् प्रेम के बिना शरीर सूने गांव के समान है। जायसी प्रेम पंथ के महान् साधक थे। हनसलानामा में भी उन्होंने प्रेम पंथ की महत्ता को दृष्टि पथ में रखा है। जायसी ने जिन कवियों की मानी या सुनी वो इनसे मिलते जुलते विचारों वाले थे। जायसी प्रेम की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि करोड़ों पोथियों का अध्ययन करके सारे मानव परमात्मा को प्यारे हो गए पर कोई भी पंड़ित नहीं बन पाया। इसके विपरीत जिसने प्रेम रूपी ज्ञान हासिल किया वो पंड़ित बन पाया –

कोटिक पोथी पढ़ी मरे, पंण्ड़ित माने कोई

एकै अच्छर प्रेम का पढ़ै, सो पंड़ित होई।।

कबीर जी भी ऐसे ही विचार रखते हैं –

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुवा पण्ड़ित भया न कोई।

ढ़ाई अच्छर प्रेम का पढ़ै सो पण्ड़ित होई।।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

प्रेम में जलन को भी जायसी चन्दन के समान शीतल बताते हैं –

जेहि जिय पेम चन्दन तेहि आगि।

पद्मावत में नायक को दिखाया गया है कि वो कष्ट व पीड़ा हँस कर सहता व हर कठिनाई का सामना बड़ी निडरता से करता है। उसके लिए प्रेम ही पूजा है –

सुनु! धनि प्रेम सुरा के पिए, मरण जियन डर रहै न हियै।।

प्रेम की कसौटी विरह है – जायसी जी का मत है प्रेम की कसौटी विरह है, क्योंकि जिस प्रकार सोना आग में तपकर परखा जाता है उसी प्रकार सच्चा प्रेम अनुभव तब होता है जब विरह रूपी आग से होकर गुजरे। पद्मावत में जिस प्रकार बारह मासे का वर्णन किया है, अकेले रहने पर कोयल का बोलना व फूलों का खिलना कष्ट देता है –

जिस घर कंता ते सुखी हम गारौ औ गर्व।

कंत पियारा वाहिरै हम सुख भूला सर्व।।

विरह अग्नि में तपकर ही प्रेम की परख होती है, इसे कोई दूसरा न समझ पाता न दवा कर पाता –

गिरि, समुन्द्र, ससि मेघ रवि सहि न सकहि बह आगि।

मुहम्मद सती सराहिए, जरे जो उस पिउ आगि।।

वेदना के कारण प्रेमी खून के आंसू रोता है विरहणी की दशा का ऐसा करूण, विवश, दीन व कात्तर दशा का वर्णन दुर्लभता से मिल पायेगा, मानों हृदय की सारी वेदना को सजीव व साकार बना दिया हो –

हाड़ भए सब किंगरी, नसै भई सब तांति।

रोंव–रोंव से धुनि उठे, कहौ विया केहि भांति।।

एक विरह में तड़पता प्रेमी हर तरफ पीड़ा को ही अनुभव कर पाता है और विरह में पड़ा इंसान नहीं इसे समझ पाता है –

विरह जगावै दरद कौ, दरद जगावै जीव।

जीव जगावै सुरति कौ, पंच पुकारै पीव।।

जायसी जी का विचार है जब विरह सह लेने के बाद मिलन घड़ी आती है तो उसका सच्चा आनंद भी सच्चा प्रेम करने वाला ही जान सकता है –

बिछुरता जब भेंटे, सो जाने जाहि नेह,

सुक्ख सुहेला उग्गवे, दुःख झेरे जिमि मेह।

निष्कर्ष – जायसी सूफी कवि हैं और सूफी कवियों का विचार है प्रेम फंदे के समान होता है।

प्रेम फांद जो परा न छूटा, जीऊ दीन्ह पै फांद न टूटा।

गिरगिट न छंद धरै दुःख तेता, खन खन पीत, रात खिन सेता।

जान प्रछार जो भा बनवासी, रोव रोव परे फंद नगवासी।

पाखन्ह फिरि–फिरी परासो फांदू , उड़ि न सकै अरूझा मां वांदू।

मुयो मुयो अहनिसि चिल्लाई, ओहि रोस नागन्ह थे धाई।

पंड़क सुआ, रंक वह चीन्हा, जेहि गिउ परा चाहि जिए दीन्हा।

तीतिर गिउ जो फांद है, निति पुकारै दोख,

सो कित हँकारि फांद गिउ, कित मारे होइ मोख।

जायसी जी का मत है प्रेम जीवन को पूर्णतः बदल देता है और प्रेम का जीवन में इतना ही महत्त है, जितना जीवन के लिए प्राणों का। प्रेम में प्रेमी के द्वारा पहुंचाया हुआ दुःख भी सुख की अनुभूति ले कर आता है। जिन्दगी का सार प्रेम के द्वारा ही वर्णित किया जा सकता है।

संदर्भ

1 जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ – 43

2 जायसी ग्रन्थावली सं॰ आ॰ रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ – 40

3 जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ – 39

4 जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ – 96

5 जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ – 25

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

6 सं॰ डॉ॰ वासुदेवशरण अग्रवाल पद्मावत, पृष्ठ – 134,35

7 पद्मावत, पृष्ठ – 134,35

8 जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ – 99

9 कबीर ग्रन्थावली, डॉ॰ माता प्रसाद गुप्त, पृष्ठ – 65

10 जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ – 64

11 जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ – 141

12 जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ – 153

13 जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ – 156

14 जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ – 959

15 संत बानि संग्रह (दादू) भाग पहला, पृष्ठ – 82

16 जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ – 76

17 जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ – 39,40